Pradeep Memorial

COMPREHENSIVE COLLEGE OF EDUCATION

Affiliated to G.G.S.I.P. University

Pratap Vihar, Kirari Extn., Nangloi, Delhi-110086

7290037803,7290037804 ,Email- pmc_coll@yahoo.com

List of Publications for session 2023-24

Sr. No	Name of Faculty	Name of Book /Chapter	ISSN No./ISBN No.
1	Dr.Archana Sisodia	Chhayavad ke Sau Varsh Aur Mukutdhar Pande	978-93-92175-27-5

PRINCIPAL
P.M.C. COLLEGE OF EDUCATION
PRATAP VIHAR, KIRARI EXTN.
NANGLOI, DELHI-110086

छायावाद के सौ वर्ष और मुकुटधर पाण्डेय

संपादक
डॉ. मीनकेतन प्रधान

नेशनल पब्लिशिंग कंपनी

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली 110002

शाखा :

प्लाट नं. 28, गणेश नगर कॉलोनी, वेस्ट मारडपल्ली
सिकंदराबाद 500026 (तेलंगाना)
मो. 9395314841 / ई-मेल : mohitmalik@hotmail.com

ISBN 978-93-92175-27-5

मूल्य : ₹ 2500

नेशनल पब्लिशिंग कंपनी, 1, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली 110002 द्वारा प्रकाशित / प्रथम संस्करण : 2023 / © मीनकेतन प्रधान / शिवा एंटरप्राईजेस, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

फोन : (011) 40074869, 47014602
ई-मेल : nationalpublishingco@yahoo.com

47. छायावादी काव्य में राष्ट्रीय-चेतना	निशा मिश्रा, डॉ. रानी अग्रवाल	239
48. संपूर्णता के कवि : सुमित्रानंदन पंत	डॉ. प्रफुल्ल कुमार	244
49. निराला की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि	प्रो. पोटकुले हिरा तुकाराम	248
50. छायावादी कवियों की सौंदर्य-चेतना	तितिक्षा जी. वसावा	252
51. छायावादी काव्य में नारी-सौंदर्य	प्रतिभा कुमारी	257
52. छायावादी काव्य में सौंदर्य-बोध	डॉ. श्रीमती बी. नन्दा जागृत	263
53. छायावादी सौंदर्य-चेतना	श्रीमती प्रेमलता पाटील	268
54. छायावाद की भाषा-शैली और गीतात्मकता	अभिषेक सिंह	274
55. निराला के काव्य में प्रेम एवं शृंगार	डॉ. चंदना शर्मा	286
56. छायावाद के शीर्ष कवि : जयशंकर प्रसाद	डॉ. सुनीता राठौर	290
57. छायावाद की विकास-यात्रा	डॉ. राजेश कुमार ठाकुर	293
58. छायावादी काव्य में नारी-चेतना	पंखी सेनापति	298
59. छायावादी काव्य में सौंदर्यानुभूति	डॉ. श्रीमती कमोद जैन	302
60. जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व: प्रेम के संदर्भ में	डॉ. विक्रम सिंह चौहान	309
61. छायावाद में काल्पनिकता एवं सौंदर्य-चेतना	डॉ. ऋतु माथुर	320
62. छायावाद का राष्ट्रीय-संदर्भ	डॉ. अर्चना सिसोदिया	325
63. छायावादी कवियों का परिचय	डॉ. चांदनी मरकाम, श्रीमती विमला नायक	330
64. छायावाद और क्रांति-पुरूष 'निराला'	डॉ. कल्पना धर	333
65. छायावाद के प्रतिनिधि कवियों की रचनाएं	बी. के. भगत	338
66. छायावादी काव्य में नारी अस्मिता	डॉ. सुबोध कुमार शांडिल्य	345
67. हिन्दी साहित्य में छायावाद	प्रो. के. के. तिवारी	350
68. छायावादी काव्य: शिल्प एवं सम्वेदना	डॉ. ज्योति किरण	352
69. छायावाद और भारतीय साहित्य	सबिता. एस	356
70. छायावादी काव्य में राष्ट्रीय-चिंतन	डॉ. सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह काश्यप	360
71. छायावादी काव्य में प्रेम और सौंदर्य	प्रियंका राय	363
72. छायावादी काव्य में शक्ति-तत्त्व	डॉ. रामायण प्रसाद विश्वकर्मा	370
73. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य-चेतना और छायावाद	डॉ. सुनीता मंडल	376
74. भारतीय जीवन-दर्शन और छायावाद	दीपक कुमार	379
75. सुमित्रानंदन पंत और प्रकृति	डॉ. नीरज चौहान	381
76. छायावाद और पुनर्जागरण	डॉ. रोशनी मिश्रा	384
77. छायावाद: काव्यशास्त्रीय मूल्यों की स्वच्छंदता	अनिल कुमार	388
78. आलोचकों की दृष्टि में 'छायावाद'	कृपाशंकर	391
79. छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के प्रतिबिम्ब	चंद्रभान सिंह मौर्य 'भानु'	395
80. छायावाद के प्रमुख कवि : एक सिंहावलोकन	श्रीमती रश्मि शुक्ला	399
81. निराला के काव्य में प्रकृति के विविध रूप	हर्ष कुमार वर्मा	402
82. छायावाद का महत्त्व	डॉ. रमेश कुमार तम्बोली	409

छायावाद का राष्ट्रीय संदर्भ

-डॉ. अर्चना सिसोदिया

आधुनिक हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग के अंतिम चरण में एक नवीन प्रकार की स्वच्छंदतावादी धारा आती होती चली गयी थी। स्वच्छंदतावादी कविता लेखन की शुरुआत करने का श्रेय 'श्रीधर पाठक' को जाता है। इस युग में प्रारंभिक रूप से मुकुटधर पाण्डेय, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, आदि की कविताओं में यह भाव और नवीन अभिव्यंजना शैली देखने को मिलती है।

यह स्वच्छंद नूतन पद्धति अपना रास्ता निकाल ही रही थी कि रवींद्रनाथ की रहस्यात्मक कविताओं को धूम हुई और कई कवि एक साथ रहस्यवाद और प्रतीकवाद या चित्रभाषावाद को ही एकांत ध्येय बना कर चल पड़े। चित्रभाषा या अभिव्यंजना पद्धति पर ही जब लक्ष्य टिक गया तब उसके प्रकाशन के लिए लौकिक या अलौकिक प्रेम का क्षेत्र ही काफी समझा गया। इस बंधे हुए क्षेत्र के भीतर चलने वाले काव्य ने 'छायावाद' का नाम ग्रहण किया।

वस्तुत: में, 'छायावाद' हिंदी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य-धारा है जो लगभग सन् 1918 से 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा इस काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। छायावाद के नामकरण का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है। इन्होंने सर्वप्रथम 1920 में जबलपुर से प्रकाशित 'श्री शारदा' पत्रिका में 'हिंदी में छायावाद' नामक चार निबंधों की एक लेखमाला प्रकाशित करवायी थी। मुकुटधर पाण्डेय के द्वारा रचित कविता 'कुररी के प्रति' 'छायावाद' की प्रथम कविता मानी जाती है।

मुकुटधर पाण्डेय ने अपने 'छायावाद'-विषयक निबंध में 'छायावाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया है जिसमें प्रकृति-सौंदर्य, प्रेम, मानवीकरण, सांस्कृतिक जागरण, कल्पना की प्रधानता, आदि छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख है। 'छायावाद' ने हिंदी में खड़ीबोली को कविता की भाषा के रूप में पूर्णत: प्रतिष्ठित कर दिया। इसके बाद ब्रजभाषा हिंदी काव्य-धारा से बाहर हो गयी। खड़ीबोली हिंदी में नये शब्द, प्रतीक तथा बिंब चित्रों के प्रयोग होने लगे। इसके प्रभाव से इस दौर की गद्य-भाषा भी समृद्ध हुई। इसलिए इसे 'साहित्यिक खड़ीबोली का स्वर्णयुग' कहा जाता है।

छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्र-प्रेम को अभिव्यक्त किया है। इस युग में

वीरों को उत्साहित करने वाली कविताएं लिखी गयीं। देश के वीरों को संबोधित करते हुए प्रसाद लिखते हैं :

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती

इतना ही नहीं आम जनता को जागृत करने के भाव से ही निराला ने 'जागो फिर एक बार' कविताएं लिखीं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय देश में व्याप्त उथल-पुथल को हिंदी कवियों ने अपने ... में अभिव्यक्ति दी। स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए साहित्यकार एक ओर तो राष्ट्रीय भावों ... के विषय के रूप में व्यक्त कर रहे थे तो वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय-चेतना को भी गति दे ... अपनी उर्वर प्रज्ञा-भूमि के कारण युगीन समस्याओं के प्रति अधिक सावधान व संवेदनशील ... स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभ से ले कर स्वतंत्रता-प्राप्ति तक भिन्न-भिन्न चरणों में राष्ट्रीय ... ओत-प्रोत कविताओं की कोख में स्वातंत्र्य-चेतना का विकास होता रहा। 'विप्लव गान' शीर्षक ... में बालकृष्ण शर्मा नवीन ने कवि की क्रांतिकामना को सम्मूर्तित किया :

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाये

भारतेंदु युग का साहित्य अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हिंदुस्तान की संगठित राष्ट्र-धन ... आह्वान था। यहीं से राष्ट्रीयता का जयनाद शुरू हुआ। जिसके फलस्वरूप द्विवेदी युग ... और दिशाओं की ओर प्रस्थान करने लगा। भारतेंदु की 'भारत दुर्दशा' प्रेमघन की आनंद ... दशा, राधाकृष्ण दास की राजनीतिक चेतना की धार तेज हुई। द्विवेदी युग में कविवर 'नाथूराम शर्मा' ने शंकर सरोज, शंकर सर्वस्व, गर्भरंडा-रहस्य के अंतर्गत बलिदान गान में 'प्राणें ... देश की वेदी पर करना होगा' के द्वारा स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए क्रांति एवं आत्मोत्सर्ग ... मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती में ऋषिभूमि भारतवर्ष के अतीत के गौरवगान के साथ ... क्षोभ प्रकट किया है। छायावादी कवियों ने राष्ट्रीयता के रागात्मक स्वरूप को ही प्रमुखता दे ... की परिधि में अतीत के सुंदर और प्रेरक देशप्रेम संबंधी मधुरगीतों व कविताओं की सृष्टि ...

यह स्वच्छंदतावाद ही 'छायावाद' के रूप में विकसित होता है। जिसके सशक्त कवि ... 'वर दे वीणा वादिनी', 'भारती जय विजय करे', 'जागो फिर एक बार', 'शिवाजी का पत्र', ... 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' 'हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' कविताएं प्रमुख हैं ... 'चंद्रगुप्त' नाटक में पूर्णरूपेण राष्ट्रीय भावना है। 'छायावाद' युग के अन्य कवियों की ... हृदय के स्तर पर प्रशस्त राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति है।

आधुनिक काल में स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित हिंदी कवियों की शृंखला में भारतेंदु ... राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाकृष्ण दास, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर ... प्रसाद शुक्ल, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, ... बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियाराम शरण गुप्त, ... द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय, इत्यादि कवियों ने परंपरागत राष्ट्रीय सांस्कृतिक ... में राष्ट्रीयता को अभिव्यक्त किया।

हिंदी की राष्ट्रीय काव्य-धारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य में देशप्रेम व ... भावना की अभिव्यक्ति की है। राष्ट्रीय काव्य-धारा के प्रणेता के रूप में ...

हिमकिरिटिनी, हिमतरंगिनी, युगचरण, समर्पण, आदि काव्यकृतियों के माध्यम से उनकी राष्ट्रीय भावछाया से अवगत हुआ जा सकता है। चतुर्वेदी जी ने भारत को पूर्ण स्वतंत्र कर जनतंत्रात्मक पद्धति की स्थापना का आह्वान किया। गुप्त जी के बाद स्वातंत्र्य शृंखला की अगली कड़ी के रूप में माखन लाल चतुर्वेदी का अविस्मृत नाम न केवल राष्ट्रीय गौरव की याद दिलाता है अपितु संघर्ष की प्रबल प्रेरणा भी देता है। जेल की हथकड़ी आभूषण बन उनके जीवन को अलंकृत करती है:

क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना। (कैदी और कोकिला)

1912 में उनकी जीवन यात्रा ने बेड़ियों की दुर्गम राह पकड़ ली। 1921 में 'कर्मवीर' के सफ़ल संपादक चतुर्वेदी जी को जब देशद्रोह के आरोप में जेल हुई तब कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा प्रकाशित पत्र 'प्रताप' और महात्मा गांधी के 'यंग इंडिया' ने उसका कड़ा विरोध किया। 'मुझे तोड़ लेना वनमाली! उस पथ पर देना तुम फेंक, मातृभूमि पर शीष चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।' 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता भारतीय आत्मा की पहचान कराती है।

अनुभूति की तीव्रता की सचाई, सत्य, अहिंसा जैसे प्रेरक मूल्यों के प्रति कवि की आस्था, दृढ़ संकल्प, अदम्य उत्साह, और उत्कट अभिलाषा को ले कर चलने वाला यह भारत मां का सच्चा सपूत साहित्यशास्त्र और कर्मयंत्र से दासता की बेड़ियों को काट डालने का दृढ़व्रत धारण करके जेल में तीर्थराज का आनंद उठाता है।

हिंदी साहित्य जिन दिनों छायावादी दौर से गुजर रहा था। उन्हीं दिनों छायावादी काव्य-धारा के समानांतर और उतनी ही शक्तिशाली एक और काव्य-धारा भी प्रवहमान थी। माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, आदि इस धारा के प्रतिनिधि कवि हैं जिन्होंने राष्ट्रीय सांस्कृतिक संघर्ष को स्पष्ट और उग्र स्वर में व्यक्त किया है। छायावाद में राष्ट्रीयता के स्वर प्रतीकात्मक रूप में तथा शक्ति और जागरण गीतों के रूप में मिलते हैं। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता 'विप्लव गान' की ये पंक्तियां दृष्टव्य हैं:

एक ओर कायरता काँपे,
गतानुगति विगलित हो जाये
अन्धे मूढ़ विचारों की वह
अचल शिला विचलित हो जाये।
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ–।

किंतु 'छायावाद' की सीमा रेखा इस धारा की सीमा रेखा नहीं है। इसने पूर्ववर्ती मैथिलीशरण गुप्त और परवर्ती दौर में भी रामधारी सिंह दिनकर के साथ अपना स्वर प्रखर बनाये रखा।

हिंदी की राष्ट्रीय काव्य-धारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य में देश-प्रेम व स्वतंत्रता की उत्कट भावना की अभिव्यक्ति की है। राष्ट्रीय काव्य-धारा के प्रणेता के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी की 'हिमकिरीटिनी', 'हिमतरंगिनी', 'माता', 'युगचरण', 'समर्पण', आदि की काव्य-कृतियों के माध्यम से उनकी राष्ट्रीय भाव-छाया से अवगत हुआ जा सकता है।

राष्ट्रीय काव्य-धारा की प्रमुख कड़ी के रूप में बालकृष्ण शर्मा नवीन का नाम आता है जो सन् 1920 में गांधी जी के आह्वान पर कॉलेज छोड़ कर आंदोलन में कूद पड़े। इन्हें 10 बार जेल जाना पड़ा, उन दिनों जेल ही कवि का घर हुआ करता था।

हम संक्रान्ति-काल के प्राणी बदा नही सुख भोग,
हमें क्या पता क्या होता है, स्निग्ध-सुखद संयोग?

घर उजाड़ कर जेल बसाने का हमको है रोग।

इनकी प्रमुख रचनाएं हैं–'कुंकुम', 'क्वासी', 'उर्मिला', आदि। काव्य-संग्रह ... 'प्राणार्पण', 'आत्मोत्सर्ग', तथा 'प्रलयंकर', आदि में क्रांति गीतों की ओजस्विता एवं ...

यहाँ बनी हथकड़ियाँ राखी, साखी है संसार।
यहाँ कई बहनों के भैया, बैठे हैं मनमार।

राष्ट्रीय काव्य-धारा को विकसित करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान की 'त्रिधारा' और '... राखी' 'झांसी की रानी' 'वीरों का कैसा हो वसंत', आदि कविताओं में तीखे भावों की ... मुखरित है। 'जलियांवाला बाग में वसंत' कविता में कवयित्री के करुण क्रन्दन से उसकी ... मूर्तिमान हो उठी है :

आओ प्रिय ऋतुराज, किन्तु धीरे से आना,
यह है शोक स्थान, यहाँ मत शोर मचाना।

दिनकर ने 'हुंकार', 'रेणुका', 'विपथगा', 'उर्वशी', 'इतिहास के आंसू', आदि कविताओं में ... सभ्यता और ब्रिटिश राज के प्रति अपनी प्रखर ध्वंसात्मक दृष्टि का परिचय देते हुए क्रांति के ... आह्वान किया :

उठो-उठो कुरीतियों की राह तुम रोक दो।
बढ़ो, बढ़ो, कि आग में गुलामियों को झोंक दो।

सोहनलाल द्विवेदी की 'भैरवी', 'राणाप्रताप के प्रति', 'आजादी के फूलों पर जय-जय ... रहा', 'विप्लव गीत कविताएं', 'प्रभाती, युगाधार' काव्य-संग्रह में स्वतंत्रता के आह्वान तथा ... के स्वर फूटे हैं। उन सब के तल में अविरल प्रेम का स्रोत बहाता कवि बंदिनी भारत मां को ... सका है :

कब तक क्रूर प्रहार सहोगे?
कब तक अत्याचार सहोगे?
कब तक हाहाकार सहोगे?
उठो राष्ट्र के हे अभिमानी
सावधान मेरे सेनानी।

इसी तरह सियाराम शरण गुप्त की 'बापू' कविता में गांधीवाद के प्रति अटूट आस्था ... सत्य, करुणा, विश्व-बंधुत्व, शांति, आदि मूल्यों का गहरा प्रभाव है। देश-प्रेम के पुण्य ... न्यौछावर की प्रेरणा देने वाले रामनरेश त्रिपाठी की कविता कौमुदी, मानसी, पथिक, स्वप्न, आदि ... देश के उद्धार के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना उत्पन्न करते हैं। देश की स्वतंत्रता को ... गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' ने कर्मयोग कविता में भारतवासियों को जागृत कर साम्राज्यवादी ... समूल नष्ट करने का आह्वान किया है। श्रीधर पाठक ने भारत-गीत में साम्राज्यवादियों के ... भारत की मुक्ति का प्रयास किया।

सहायक ग्रंथ

1. इंटरनेट एवं अन्य https://hindisahityasimanchal.files
2. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य की संवेदना का विकास
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका
5. डॉ. राम कुमार वर्मा, हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास